प्रश्न– उपनिषद पद का क्या अर्थ है? प्रमुख उपनिषदों का परिचय देते हुए उनके जीवन दर्शन, महत्व एवं संदेश पर प्रकाश डालो।

उत्तर– उपनिषदों को वैदिक साहित्य का अंग माना गया है। उपनिषद को वेद या श्रुति भी कहा गया है। चूँकि यह वेद का अन्तिम भाग है, इसलिए इसके विषय को वेदान्त भी कहा गया है। वैदिक साहित्य के वर्ण्य-विषय को तीन भागों के– कर्म, उपासना और ज्ञान में बाँटा गया है जिसमें ज्ञान विषयक चर्चा सिर्फ उपनिषदों में ही मिलती है। उपनिषदों में मुख्य रूप से ब्रह्म-विद्या का निरूपण किया गया है। उपनिषद, 'उप' और 'निषद्' इन दो शब्दों से बना है। 'उप' का अर्थ है निकट और 'निषद' से आशय है बैठना। गुरु के निकट बैठकर आध्यात्म तत्व का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करना उपनिषद का अर्थ है।

दूसरे विश्लेषण के अनुसार उपनिषद् शब्द 'उप' और 'नि' उपसर्ग के साथ 'सद्' धातु में क्विप प्रत्यय जोड़ने से बना है तथा सद् धातु के तीन अर्थ माने गये हैं— 1. विवरण = नाश होना 2. गति = प्राप्त होना 3. अवसादन = शिथिल होना। इसप्रकार उपनिषद के अर्थों में सद् धातु के ये तीनों अंग सुसंगत हैं। विचारकों का कहना है कि उपनिषद का मुख्य कार्य आध्यात्म विद्या है जो विद्या ब्रह्म की प्राप्ति करा देती है। अधिकांश विचारक उपनिषद् का निर्वाचन इससे जुड़े अर्थ ब्रह्म ज्ञान के उपदेश के द्वारा अविद्या का नाश कर सांसारिक जीवनरूपी बन्धन का उच्छेद करना मानते हैं। इसीप्रकार वैदिक साहित्य में उपनिषदों का स्थान सबसे अन्त में होते हुए भी और इन्हें वेदान्त कहे जाने पर भी उपनिषदों का अपना निजी महत्व है। जर्मनी के प्रसिद्ध तत्ववेत्ता शोपेनहर के शब्दों में, "सारे संसार में उपनिषदों ~~के समान~~ ग्रंथों के समान कोई ऐसा ग्रंथ नहीं, जिसमें मानव जीवन को इतना ऊँचा उठाने की क्षमता हो।" पं० रामगोपालाचार्य ने लिखा है कि, "उपनिषद ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनमें आध्यात्मिक जिज्ञासा के बारे में संसार के दूसरे धर्म-ग्रन्थों की ~~अपेक्षा~~ अपेक्षा कहीं अधिक वैज्ञानिक भावना देखने में आती है। जिन ऋषियों के विचार और उपदेश उनमें भरे पड़े हैं, वे वर्तमान युग के अधिकांश वैज्ञानिकों की भाँति ही रचनात्मक शंकाओं से प्रेरित दिखाई पड़ते हैं। उनके प्रश्नों एवं उत्तरों से मालूम होता है कि वे एक ऐसे काल में हुए थे, जब परम्परा और पुरातन आचार-विचारों के अनुसरण के साथ-साथ मनुष्य परमसत्य को जानने की उत्कट इच्छा रखता था, और तबका वह वातावरण बड़ा ही साहसपूर्ण और स्वतंत्र विचारों से व्याप्त था।

उपनिषदों के रचनाकाल के संबंध में

एक सर्वसम्मत निश्चित रूप का अभाव देखा जाता है एवं उपनिषदों में वर्णित तत्त्व त्रैकालिक होने के कारण विचारक परम्परा विरोधी मत व्यक्त करते हैं। लुडविग साहब ने तो वर्षों तक उपनिषद ग्रंथों का अध्ययन करने के बाद यही मत प्रकट किया था कि उपनिषद ज्ञान की प्राचीनता आज से लगभग 3000 वर्ष पूर्व की ठहरती है। कुछ लोग उपनिषदों का रचनाकाल 3000 ई० पू० से लेकर 4500 ई० पूर्व तक मानते हैं। कुछ 1000 ई० पूर्व और कोई 1600 ई० पूर्व। इस प्रकार उपनिषदों का विकास क्रम स्पष्ट करना सहज नहीं है लेकिन यह तो निर्विवाद रूप से सत्य है कि वह वैदिक साहित्य का अंतिम सोपान है।

उपनिषद ग्रन्थों की वास्तविक संख्या अभी तक सर्वमान्य नहीं है और इस संबंध में विचारक अपने पृथक-पृथक मत व्यक्त करते हैं। जहाँ 'मुक्तिकोपनिषद' में 108 उपनिषदों का उल्लेख हुआ है वहीं 'उपनिषद वाक्य महाकोश' में 223 उपनिषद ग्रंथों की नामावली दी गयी है। अडियार लाइब्रेरी मद्रास से प्रकाशित एक ~~[illegible]~~ संग्रह में 270 उपनिषद हैं। स्वयं शंकराचार्य ने तो ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतकी व श्वेताश्वर

नामक बारह उपनिषद माने हैं और उन पर प्रामाणिक भाष्य लिखे हैं। शंकराचार्य के अतिरिक्त रामानुज, निम्बार्क, वल्लभ और रुद्र आदि जितने भी सम्प्रदाय प्रवर्तक श्रेष्ठ आचार्य हुए हैं तथा उनके सम्प्रदाय अनुवर्ती विद्वानों ने उक्त बारह उपनिषद ग्रंथों पर ही भाष्य व टीकाएं लिखी हैं। अतः इन 12 उपनिषदों को ही प्रामाणिक कहा जा सकता है।

किस वेद से किन उपनिषदों का अंग-सम्बन्ध है — वह इस प्रकार है—

ऋग्वेदीय — ऐतरेय
यजुर्वेदीय — कठ, तैत्तिरीय, श्वेताश्वर, ईश और बृहदारण्यक।
सामवेदीय — छांदोग्य और केन।
अथर्ववेदीय — मुण्डक, प्रश्न और माण्डूक्य।

इन उपनिषदों में कुछ पद्यमय हैं और कुछ गद्यमय। प्राचीनतम ~~[illegible]~~ उपनिषदें प्रायः गद्यात्मक हैं। तीन उपनिषद गद्य और पद्य दोनों में हैं। नीचे लिखे अनुसार

1. ईशावास्य — पद्यमय
2. केन — "
3. कठ — "
4. मुंडक — "
5. मांडूक्य — गद्यमय
6. प्रश्न — गद्यमय तथा पद्यमय
7. ऐतरेय — " "
8. तैत्तिरीय — गद्यमय

9. श्वेताश्वतर — पद्यमय
10. छान्दोग्य — गद्यमय तथा पद्यमय
11. बृहदारण्यक — गद्यमय
12. कौषीतकी उपनिषद् के बारे आचार्यों की टीकाएं नहीं मिलती हैं।

1. ईशावास्योपनिषद् — यह सबसे छोटा उपनिषद् है। इसमें केवल 18 श्लोक हैं। यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद संहिता के अंतिम 40 वें अध्याय से संबंधित है। छोटा होते हुए भी इस उपनिषद् में ब्रह्म विद्या का पूरा सार तत्व आ गया है, जैसे गागर में सागर भर दिया गया हो। इस संदर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है— "ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किंच जगत्यां जगत्, तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।" इस मंत्र का अर्थ है— दुनिया में जो भी जीवन है, सब ईश्वर से भरा हुआ है। कोई चीज ईश्वर से खाली नहीं है। संतों की भाषा में बोलें, तो यहां केवल उसी की सत्ता है, वही एक मालिक है। यह समझकर हमें सब उसी को समर्पण करना चाहिए, और जो कुछ उसके पास से मिले, उसको प्रसाद समझकर ग्रहण करना चाहिए। यहां मेरा कुछ भी नहीं, सब ईश्वर का है — ऐसी भावना रखनी चाहिए। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि ईशावास्य उपनिषद् में इतनी संक्षिप्तता के बावजूद ब्रह्म विद्या संबंधी ज्ञान कोई दूसरे उपनिषद् में दुर्लभ है।

2. केनोपनिषद् — सामवेद की जैमिनीय शाखा के ब्राह्मण ग्रंथ का नवम अध्याय है। इसका प्रथम मंत्र केन से प्रारम्भ होता है। इसका दूसरा नाम ब्राह्मणोपनिषद् भी है। केन उपनिषद् में 4 खण्ड और कुल 34 कण्डिकाएं हैं। केन का अर्थ होता है 'किससे'। इस उपनिषद् में प्रश्न किया गया कि पंच प्राण रूपी पांचों देवताओं का संचालन किस देव से होता है? अन्त में कहा गया कि ब्रह्म-ज्ञान के रहस्य का मूल है— तप, इन्द्रिय-दमन और कर्तव्य कर्म।

3. कठोपनिषद् — कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का अंश है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ। प्रसिद्ध नचिकेता की कथा से इस उपनिषद् का आरम्भ होता है, जिसे यम ने ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया था। यह उपदेश 'ज्ञान अग्नि' है। उसे नचिकेता अग्नि या यज्ञ कहते हैं। प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग का भेद भी इसी उपनिषद् में बताया गया है। ब्रह्म का निरूपण इसमें काव्यमय शैली में किया गया है।

4. प्रश्नोपनिषद् — अथर्ववेद की पिप्पलाद संहिता के ब्राह्मण भाग का एक अंश है। यह गद्य प्रधान है। इसमें भागवत ऋषि के पुत्र सुकेशा, शिवि के पुत्र सत्यकाम, सौर्यायणी, कौशल्य, वैदर्भि और कबन्धि नामक ऋषियों द्वारा पूछे गये ब्रह्म-विद्या विषयक प्रश्नों की प्रधानता के कारण ही यह प्रश्नोपनिषद् कहलाता है।

5. मुण्डकोपनिषद् — मुण्डकोपनिषद् का

आधार अथर्ववेद की शौनक संहिता है। इस उपनिषद में तीन मुण्डक हैं तथा प्रत्येक मुण्डक में दो-दो खण्ड। इस उपनिषद में 'अक्षर ब्रह्म' के स्वरूप का बड़ा सुन्दर प्रतिपादन किया है। अक्षर ब्रह्म को कहा गया है कि वह शाश्वत है, अमूर्तरूप है और सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है। बताया गया है कि अपरा विद्या की अर्थात शास्त्रीय ज्ञान की उस तक पहुँच नहीं। केवल परा विद्या अर्थात प्रत्यक्ष अनुभूति के ऊँचे ज्ञान से ही उसका साक्षात्कार किया जा सकता है। जीवात्मा और परमात्मा ये दो पक्षी संसार रूप वृक्ष के ऊपर बैठे हैं, यह सुन्दर रूपक भी इसी उपनिषद में आया है।

6. माण्डूक्योपनिषद — यह अथर्ववेद से संबंधित है। यह एक छोटी सी उपनिषद है। इसे माण्डूक्य नामक ऋषि ने रचा था। यह गद्यात्मक है। आत्मा की जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा चौथी तुरीया अवस्था का इसमें निरूपण किया गया है। इसमें वाच्य और वाचक की एकता दिखाई गयी है। ईश्वर ही जगत का कर्ता, पालक और संहारक है, यह भी इसमें बताया गया है।

7. तैत्तिरीयोपनिषद — तैत्तिरीयोपनिषद कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता के ब्राह्मण ग्रंथ से सम्बद्ध है। इसमें शिक्षा, ब्रह्म और भृगु नामक तीन वल्लियाँ हैं। पहली वल्ली में 12 अनुवाक हैं, दूसरी में 9 तथा तीसरी में 10। अनुवाक का अर्थ है किसी उठाये गये प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर।

'रस-तत्व' को इसी उपनिषद में ब्रह्म का स्वरूप बताया गया है जो आनन्द से भी परे है। भृगु को अपने पिता से जो ब्रह्म ज्ञान मिला, उसका मूल, इस उपनिषद के अनुसार, यह था कि अन्न और उससे निर्मित प्राण, चक्षु, श्रोत्र, मन और वाक् ये प्रत्येक ब्रह्म है। भृगुवल्ली में ब्रह्म-मीमांसा की गयी है। इसमें भी वरुण ने अपने पुत्र को ब्रह्म-विद्या का उपदेश दिया है।

8. ऐतरेयोपनिषद — यह भी एक छोटी उपनिषद है। यह महीदास ऐतरेय ऋषि की रचना है। यह ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण के अंतिम भाग से सम्बद्ध है। इसमें तीन अध्याय हैं। पहले अध्याय में तीन खंड, दूसरे और तीसरे अध्याय में एक-एक खंड है। इस उपनिषद में सृष्टि-रचना का क्रम बताया गया है। यह भी कहा गया है कि देव परोक्षप्रिय होते हैं। यह आत्मा क्या है? इसका बड़ा सुन्दर विवेचन इस उपनिषद में किया गया है।

9. छान्दोग्योपनिषद — यह बड़ी उपनिषद है। यह सामवेद की कौथुम संहिता के तीन ब्राह्मण-ग्रंथों ताण्ड्य, षड्विंश तथा मंत्र के अन्तर्गत आनेवाले 32 अध्यायों को छोड़कर शेष 8 भागों का नाम है। इस उपनिषद में जानश्रुति, सत्यकाम, उपकोशल, श्वेतकेतु, अश्वपति आदि की सुन्दर और ज्ञान वर्द्धक कथाएँ हैं। गायत्री के

उपासना का वर्णन भी इसीमें आया है। बतलाया गया है कि यह सारा पसारा ब्रह्म ही है, यह पुरुष संकल्पमय है और पुरुष ही यज्ञरूप है। इसी उपनिषद् में देवकीपुत्र श्रीकृष्ण को घोर आंगिरस ऋषि ने उपदेश दिया है जिससे सूर्य के मुख-व्यास भी मूल बने थे विविध अग्नियों का वर्णन भी इसीमें आया है। 'तत्वमसि' महावाक्य का निरूपण इसी में किया गया है। सनत्कुमार इसीमें नारद को उपदेश देते हैं। 'भूमा' की उपासना का उल्लेख भी इसीमें आया है। सत्य शब्द की निरुक्ति, ब्रह्मचर्य का माहात्म्य और प्रजापति का उपदेश इसके आठवें प्रपाठक में बड़ा सुन्दर मिलता है। इन्द्र और विरोचन की प्रसिद्ध कथा इसीके अन्तिम भाग में आई है।

10. बृहदारण्यकोपनिषद् – यह सबसे बड़ी उपनिषद् है। यह शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित है। इसके 6 अध्याय हैं। दृप्त बालाकि कथा के अतिरिक्त इस उपनिषद् में प्रसिद्ध मैत्रेयी याज्ञवल्क्य-संवाद, जनक की सभा में याज्ञवल्क्य से ~~गार्गी~~ गार्गी के प्रश्न, जनक-याज्ञवल्क्य संवाद, श्वेतकेतु का पांचालों की सभा में जाना तथा मनुष्यों, देवों और असुरों को प्रजापति द्वारा दिया गया केवल एक अक्षर 'द' का उपदेश इस उपनिषद् की मुख्य विशेषताएँ हैं।

11. कौषीतकी उपनिषद् – कौषीतकी उपनिषद् प्राचीनतम माना जाता है। ऋग्वेद के कौषीतकी-ब्राह्मण का एक भाग आरण्यक कहा जाता है इनमें तीसरे और छठे अध्यायों के सम्मिलित

रूप का नाम कौषीतकी उपनिषद् है। कुषीतक ऋषि इसके प्रधान उपदेष्टा थे, अतः यह कौषीतकी कहलाता है। इसके प्रथम अध्याय में गार्ग्यायणि नामक क्षत्रिय राजा ने उद्दालक आरुणि को परलोक संबंधी शिक्षा दी है। द्वितीय अध्याय में प्राणों की विविध उपासनाओं, ~~[illegible]~~ महाप्रयाण की कृति तथा पिता-पुत्र में स्नेहादि का निरूपण है। तृतीय अध्याय में इन्द्र ने दिवोदास को प्राण और प्रज्ञा के संबंध में उपदेश दिया है। चतुर्थ अध्याय में काशीराज अजातशत्रु ने बालाकि को परब्रह्म का उपदेश दिया है।

12. श्वेताश्वतरोपनिषद् – यह कृष्ण यजुर्वेद के श्वेताश्वतर ब्राह्मण का एक भाग है। इसके प्रथम अध्याय में परमात्म साक्षात्कार का ~~[illegible]~~ उपाय बतलाया गया है। आगे के अध्यायों में ध्यान की सिद्धि, प्रार्थना के प्रकार, ब्रह्म-विद्या के योग, सांख्य योग आदि की चर्चा हुई है। इसकी विवेचन शैली बड़ी मधुर एवं भाषा सरल है।

उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय – प्रकृति पुरुष और परमात्मा ~~के~~ विवेकी विश्लेषण है।
उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय है मूल तत्व प्रकृति से ही जगत का अस्तित्व है। इसी प्रकृति को माया भी कहते हैं। प्राणी चार प्रकार के माने गये हैं – उद्भिज, अण्डज, स्वेदज एवं जरायुज।

कर्मेन्द्रियाँ पाँच हैं – वाक, पाणि (हाथ), पाद, पायु (गुदा) और उपस्थ (जनेन्द्रिय)। इसी प्रकार ज्ञानेन्द्रियाँ भी पाँच हैं – श्रोत्र, चक्षु,

घ्राण, जिह्वा और त्वचा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार भी ज्ञानेन्द्रियों के विशिष्ट वर्ग में माने गये हैं। विषय एक है और ये सभी प्रकृति तत्व के कार्यपालक हैं।

पुरुष का तात्पर्य जीवात्मा से है और जीवात्मा को अजन्मा, नित्य, शाश्वत एवं पुरातन कहा गया है। उसे जन्म और मृत्यु से रहित एवं शरीर नष्ट हो जाने पर भी अविनाशी बतलाया गया है। उसे मेधावी घोषित किया गया है। परमात्मा ब्रह्म है और वह सम्पूर्ण सृष्टि में वैसे ही व्याप्त है जैसे दूध में नवनीत। वह अक्षर है जो कभी नष्ट नहीं होने वाला है। उस अक्षर ब्रह्म से जीवात्माएं उसी प्रकार उत्पन्न होती हैं जिस प्रकार किसी विशाल-काय ज्योतिपुंज से अनेक ज्योति स्फुलिंग।

जीवन दर्शन की दृष्टि से उपनिषदें यह मानती हैं कि जन्म दुखमूलक है। इससे छुटकारा पाने के लिए परमार्थ का ज्ञान जरूरी है। क्लेशयुक्त जीवों को सुखी बनाने के लिए किये जाने वाले उपकारों एवं क्रिया-कलापों में यह परमार्थ ही चरितार्थ होता है। सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय की चिंता किये बिना कर्मरत रहने में ही पुरुषार्थ है। आचार, व्यवहार एवं कर्तव्य सम्बन्धी अनेक अनूठे संदेश उपनिषदों में भरे पड़े हैं। सत्य बोलो, धर्म पर चलो, ज्ञानोपार्जन में कभी आलस्य मत करो, कभी सत्य से दूर न जाओ, धर्म से कभी मुख न मोड़ो,

स्वाध्याय एवं सदोपदेश दान से कभी जी न चुराओ, देवों और पितरों को संतोष देने वाले कार्यों से कभी विरत न हो, माता को देवी एवं पिता को देवतुल्य और आचार्यों को देव के समान पूजनीय समझो, अतिथि को द्वार पर आये देव के रूप में पहचानो आदि-आदि। मनुष्यों के बीच जो प्रशंसनीय कार्य हैं उन्हीं का अनुकरण करो, अन्य आलोच्य कार्यों से दूर रहना ही उपनिषद का दर्शन है।

उपनिषदों का महत्व — उपनिषद के महत्व के विषय में विशेष कहने की आवश्यकता नहीं; द्वैतवाद (मध्वाचार्य), अद्वैतवाद (शंकराचार्य जो सिर्फ ईश्वर को मानता है), विशिष्ट द्वैतवाद (रामानुजाचार्य), शुद्धाद्वैतवाद (वल्लभाचार्य), द्वैता-द्वैतवाद (निम्बकाचार्य) आदि भारतीय दर्शनों की उपनिषदों की प्रकृति, जीव-परमात्मा विषयक विवेक ही है। उपनिषदों की भावराशि ने मुगल बादशाह शाहजहाँ के गुणी एवं पंडित पुत्र दाराशिकोह का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया था और सन 1657 ई० में उन्होंने कई उपनिषदों का अनुवाद फारसी में कर डाला था। पाश्चात्य विद्वानों का ध्यान लगभग 1775 ई० में उपनिषदों की ओर आकृष्ट हुआ। इनमें शोपेनहर, मैक्समूलर, पालडासन, मैकडोनेल, श्लेगल आदि सभी ने एक स्वर से उपनिषदों के विवेक को विश्व-मनीषियों का सर्वोत्तम ज्ञान कहा है।